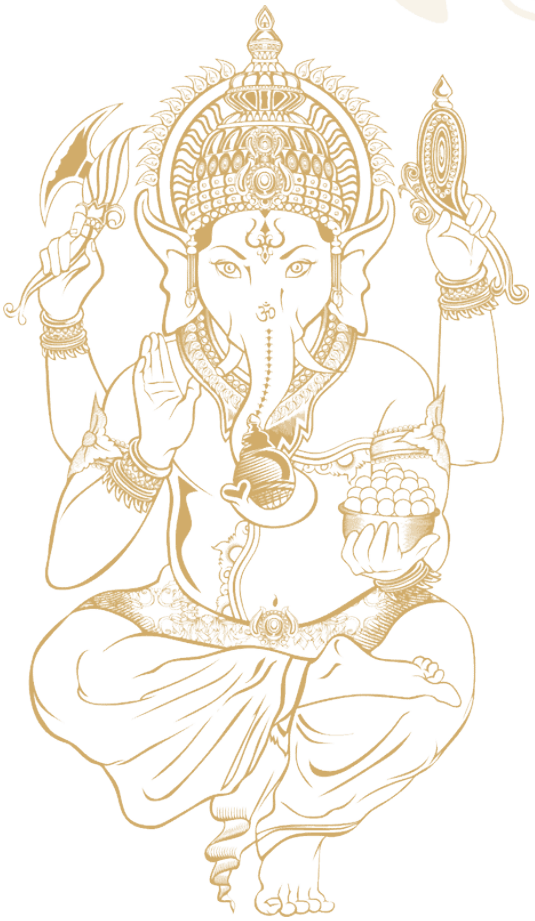

Sakshi

16 Feb 2000

04:40 AM

Rohtasgarh

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119157201

तिथि 16/02/2000 **समय** 04:40:00 **वार** बुधवार **स्थान** Rohtasgarh **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:51:18
अक्षांश 24:36:00 उत्तर **रेखांश** 83:59:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:05:56 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	14:27:02 घं
वेलान्तर	00:14:10 घं
सूर्योदय	06:28:51 घं
सूर्यास्त	17:47:55 घं
चैत्रादि संवत	2056
शक संवत	1921
मास	माघ
पक्ष	शुक्ल
तिथि	11
नक्षत्र	आर्द्रा
योग	प्रीति
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	घ-घटी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

राहु 10वर्ष 2मा 14दि
गुरु
02/05/2010
02/05/2026

गुरु	19/06/2012
शनि	31/12/2014
बुध	07/04/2017
केतु	14/03/2018
शुक्र	12/11/2020
सूर्य	31/08/2021
चन्द्र	31/12/2022
मंगल	07/12/2023
राहु	02/05/2026

योगिनी

मंगला 0वर्ष 6मा 24दि
सिद्धा
10/09/2020
11/09/2027

सिद्धा	20/01/2022
संकटा	11/08/2023
मंगला	21/10/2023
पिंगला	11/03/2024
धान्या	10/10/2024
भ्रामरी	21/07/2025
भद्रिका	11/07/2026
उल्का	11/09/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			00:44:56	मक	उत्तराषाढ़ा	2	सूर्य	राहु	---	0:00			
सूर्य			02:43:24	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि	1.41	कलत्र	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			12:26:23	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	0.92	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			09:07:54	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि	1.57	मातृ	भ्रातृ	विपत
बुध			20:46:58	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.07	आत्मा	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			06:19:09	मेष	अश्विनी	2	केतु	राहु	मित्र राशि	1.22	पुत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र			03:23:31	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	मित्र राशि	1.23	ज्ञाति	कलत्र	वध
शनि			17:32:17	मेष	भरणी	2	शुक्र	मंगल	नीच राशि	0.96	अमात्य	आयु	साधक
राहु			09:44:05	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			09:44:05	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

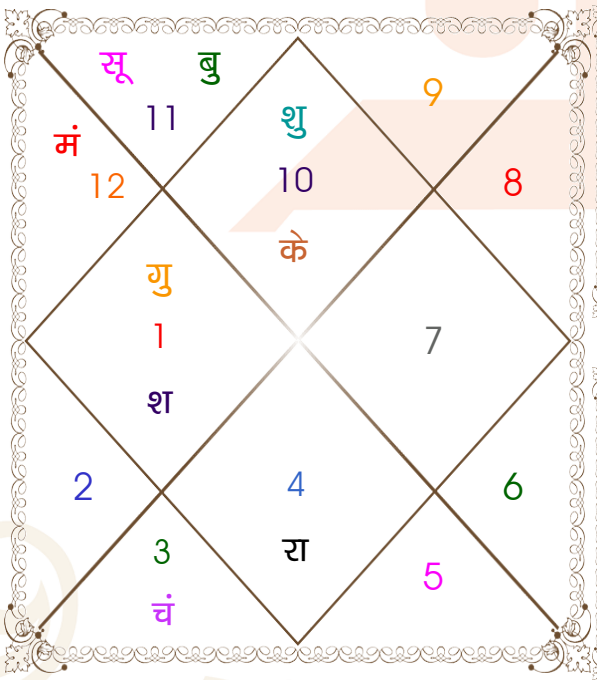

चन्द्र कुंडली

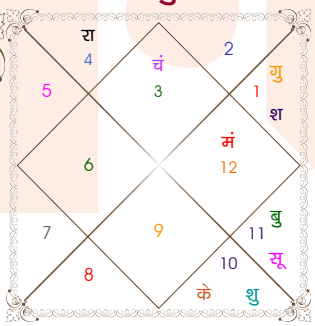

नवमांश कुंडली

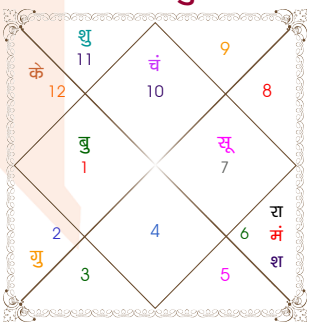

सर्वाष्टकवर्ग

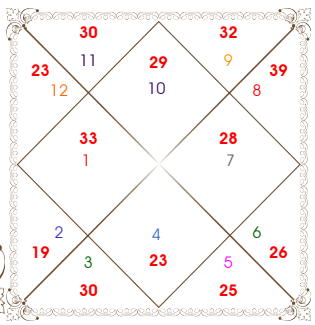

दशमांश कुंडली

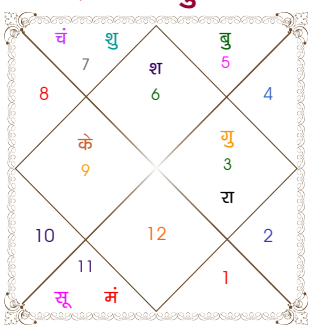

नक्षत्रफल

आप आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं अतः आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि स्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, नाड़ी आद्य, गण मनुष्य तथा योनि श्वान होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथमाक्षर "घ" होगा।

आप अपने जीवन काल में व्यस्तता या अन्य कारणों से भोजन समय पर लेने में प्रायः असमर्थ रहेंगी। आप में शारीरिक लावण्यता भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेगी। आपके स्वभाव में क्रोध की प्रबलता रहेगी तथा यदा कदा छोटी छोटी बातों पर आप अनावश्यक क्रोध का प्रदर्शन करेंगी साथ ही समाज में अन्य जनों से उपकृत होने पर आप उनके उपकार को अल्प मात्रा में ही स्वीकार करेंगी। आप दया एवं करूणा के स्थान पर भी कभी कभी कठोरता का प्रदर्शन करेंगी। समीपस्थ सम्बन्धियों की आप प्रिय रहेंगी तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त होती रहेगी।

क्षुधाधिको रूक्षशरीरकान्ति बन्धुप्रियः कोपयुतः कृतघ्नः।
प्रसूति काले च भवेत्किलार्द्रा दयाद्रचेता न भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधा से आतुर, रूक्ष शरीर वाला, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा दया से हीन होता है।

आपमें चंचलता का भाव प्रबलरूप से विद्यमान रहेगा तथा आप किसी भी कार्य को स्थिर मन से करने में असमर्थ रहेंगी। साथ ही आप एक स्थान में स्थिर नहीं रहेंगी तथा नित्य परिवर्तन की इच्छा करेंगी। आपके पास धनार्जन भी मध्यम रूप से ही होगा परन्तु शारीरिक बल से आप सर्वदा पूर्ण रहेंगी एवं अपने बाहुबल से समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। आपकी शिक्षा भी मध्यम ही रहेगी परन्तु आचरण श्रेष्ठ रहेगा।

कृतघ्नः गर्वितोहीनः नरो पापरतः शठः।
आर्द्रानक्षत्र सम्भूतो धनधान्य विवर्जितः।।
मानसागरी

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृतध्न, गौरव विहीन, पापी तथा धन एवं धान्य से हमेशा हीन होता है।

आपके मन में अभिमान का भाव भी नित्य विद्यमान रहेगा साथ ही आपको अत्यन्त परिश्रम से महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त होंगी। आपका सामान्य जीवन संघर्षमय रहेगा एवं परिश्रम पूवर्क आप जीविकार्जन करेंगी। अन्य लोगों के प्रति आपमें प्रेम का भाव भी रहेगा अतः सामाजिक जनों से आप सौहार्द अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे।

अर्थात् आर्द्रा नक्षत्र का जातक कुटिल हृदय वाला, अभिमानी, कृतघ्न, हिंसक प्रवृति वाला तथा पाप कर्म करने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से कोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

आप मिथुन राशि में पैदा हुई हैं। अतः आपकी आखें थोड़ी लालिमा युक्त होकर काली होंगी तथा बाल घुंघराले होंगे। आपके समस्त शरीर के अंग सुन्दर एवं स्वस्थ होंगे तथा नासिका उन्नत होगी। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में रूचि रखेंगी तथा इनसे आप पर्याप्त मात्रा में ज्ञानार्जन करेंगी। आप सन्देशों के आदान प्रदान के कार्य में इच्छुक तथा सफल रहेंगी। आप कुशाग्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा इसी तीव्र बुद्धि से अन्य जनों के मन की बातों को जानने में सफल हो जाएंगी। आपके सद्व्यवहार तथा विनयशीलता की सारा समाज प्रशंसा करेगा। आपकी वाणी अत्यन्त प्रिय होगी जिससे सुनने वाले हर्षित होंगे। आप हंसने तथा हंसाने के कार्य में अतीव चतुर होंगी तथा आजीवन इसका प्रदर्शन करती रहेंगी। संगीत तथा गाने बजाने में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा नृत्य शास्त्र की आप अच्छी ज्ञाता होंगी।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलताम्रेक्षणः शास्त्राविद्।
दूतः कुञ्चिद् मूर्धजः पटुमति हास्योड्गित द्यूतवित्।।
चार्वाङ्गाः प्रियवाक् प्रभक्षण रूचिर्गीतप्रियो नृत्यवित्।
क्लीबैर्याति रतिं समुन्नतश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे।।

बृहज्जातकम्

आपकी अधिकांश शरीर की नसें स्पष्ट दृष्टिगोचर होंगी तथा आपकी हथेली में मत्स्य चिन्ह अंकित होगा। साथ ही शरीर भी दीर्घ होगा। आप देखने में अति सुन्दर होंगी। लेखन प्रतिभा की नैसर्गिक रूप से आप धनी होंगी तथा जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुख संसाधनों के उपभोग करने का सौभाग्य आपको प्राप्त होगा। विषय वासनाओं में भी आप आकृष्ट रहेंगी । आप सौभाग्यवती होंगी तथा पति को पूर्ण रूप से वश में करने में सफल

रहेंगी।

उन्नासश्यामचक्षु सुरतविधिकला काव्यकृद्भोग भोगी।
हस्ते मत्स्याधिपाङ्को विषय सुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।।
कान्तः सौभाग्य हास्य प्रियवचनयुतः स्त्रीजितौ व्यायताङ्गो।
याति क्लीबैश्च रतिकर्म संख्यशशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।
सारावली

सम्पूर्ण जीवन में आप हास्य प्रिय होकर दीर्घायु को प्राप्त होंगी। इधर उधर घूमना तथा यात्रा करना आपको अल्पमात्रा में ही रूचिकर लगेगा अतः घर में रहकर भी आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगी।

दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।।
जातकपरिजातः

आप समाज में अपने सद्व्यवहार तथा सद्गुणों के कारण अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगी। पुरूष वर्ग के प्रति आपका आकर्षण कुछ अधिक मात्रा में ही रहेगा तथा उनके मध्य आप प्रिय तथा आदरणीया होंगी। आप अपनी सज्जनता तथा योग्यता के परिणाम स्वरूप समाज में यथोचित मान सम्मान तथा यश प्राप्त करेंगी।

प्रियकरः करमत्स्ययुतोनरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुन राशि गतौहिम गौ भवेत्सुजनतजनताकृत गौरवः।।
जातकाभरणम्

आप अपने काव्य या भाषण में श्लिष्ट युक्त स्पष्ट वाक्यों का प्रयोग करेंगी जिससे जन सामान्य सुगमतापूर्वक ग्रहण करेगा। आप अपने संबंधियों मित्रों तथा समाज के लोगों की भलाई तथा सेवा सहायता कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगी। आप पित्त तथा कफ युक्त स्वभाव युक्त तथा चाल चलन में श्रेष्ठ रहेंगी।

मृदुरूपचित्तगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितौ हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मचित्त स्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवाद्यानुरक्तः।।
जातक दीपिका

आपके नेत्र सदैव चंचलता से परिपूर्ण रहेंगे। नृत्य तथा संगीत के प्रति आपका गहन आकर्षण रहेगा तथा अपनी वैयक्तिक गुणों के द्वारा आप धनैश्वर्य को प्राप्त करेंगी तथा सद्व्यवहार एवं सद्गुण से समाज में यश की प्राप्ति करेंगी। आप अच्छी वक्ता भी होंगी तथा जिस का संकल्प एक बार मन में कर लेंगी उसे पूर्ण करके ही छोड़ेंगी। आप न्यायवादी होंगी। तथा सभी कार्यों को सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगी।

मृदुवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालु मैथुनप्रियः।

गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभोगी धनी गुणी।।
गौरोदीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः।।
मानसागरी

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी देवताओं तथा ब्राहमणों में हार्दिक श्रद्धा होगी। समय समय पर आप इनकी पूजा तथा अर्चना करके अपनी श्रद्धा प्रकट करेंगी। अहंकार की भावना को भी कभी कभी आप प्रकट करेंगी। दया तथा करूणा के भाव से भी आप युक्त रहेंगी तथा यथा शक्ति समयानुसार आप दीन दुःखियों की सेवा तथा सहायता करने में पीछे नहीं रहेंगी। आप एक बलवती महिला होंगी तथा एक से अधिक कार्यों या कलाओं में दक्ष होंगी। आपका शरीर सुन्दर, स्वस्थ तथा कान्तिमय रहेगा तथा बहुत से लोगों को आप सुख प्रदान करने वाली होंगी। साथ ही परिश्रम से आप ज्ञानार्जन में भी सफलता प्राप्त करेंगी।

आप हमेशा मान सम्मान धनैश्वर्य तथा भौतिक सुखों का अपने जीवन में उपभोग करेंगी। साथ ही निशाने बाजी में आप अत्यन्त चतुर होंगी। नगरवासियों को वश में करने में आप सफलता प्राप्त करेंगी अर्थात् आप नगर की एक गणमान्य महिला होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप श्वान योनि में पैदा हुई है अतः आप हमेशा कुछ न कुछ कार्य सम्पन्न करती रहेंगी तथा जो भी आपके कार्य होंगे उत्साहपूर्वक होंगे। आपमें हिम्मत का भाव रहेगा तथा बहादुरी से अपना जीवन यापन करेंगी। लेकिन अपने भाई बन्धुओं से आपका नित्य कुछ न कुछ झगड़ा या मन मुटाव चलता रहेगा। लेकिन माता पिता की आप आज्ञाकारी होंगी तथा निस्वार्थ भाव से उनकी सेवा करेंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की

अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए आषाढ़ मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वाद्वशी तिथियां, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, चतुष्पाद करण, सोमवार तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फलों को प्रदान करने वाले हैं। अतः आप 15 जून से 14 जुलाई के मध्य 2,7,12 तिथियों, स्वाती नक्षत्र, परिघयोग, चतुष्पाद करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही सोमवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन्ही दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूरा-पूरा ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नित्य प्रातः तथा सायं काल नियमित रूप से श्री गणेश जी के दर्शन करने चाहिए तथा बुधवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही पन्ना, हरा वस्त्र, मिश्री, घी, गेहूं इत्यादि पदार्थों का भी दान करना चाहिए इससे मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।